परिचय

संत जेवियर्स कॉलेज सिमडेगा

चौथा संस्करण



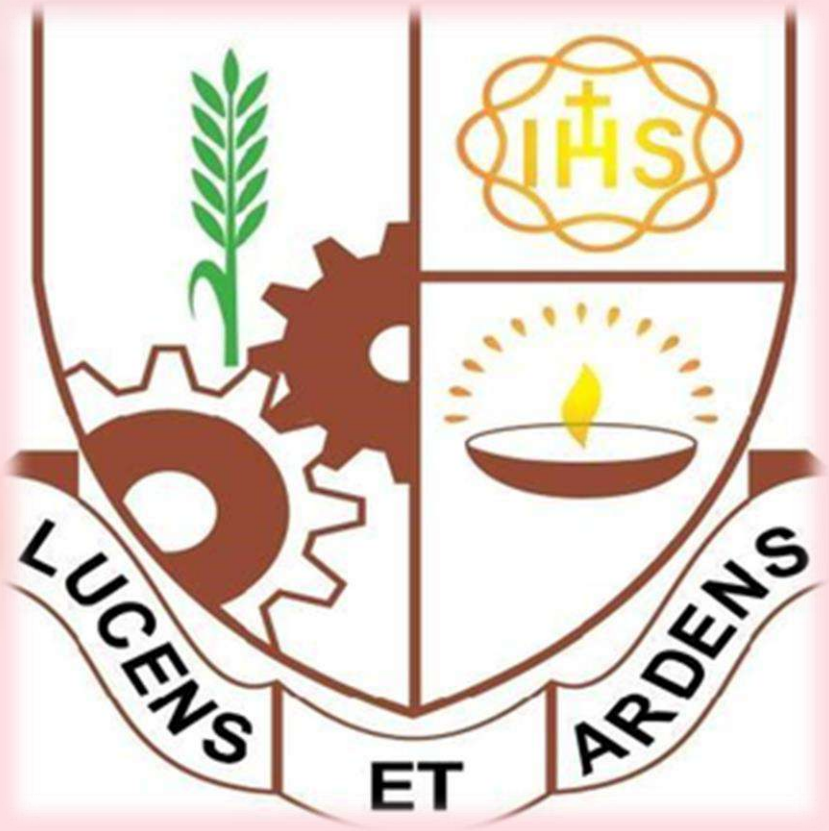

हिंदी दिवस


PSLV
C57
PSOMXL1
PSOMXL3
INDIA
PSOMXL4
PSOMXL2
ADITYA
L1





संत जेवियर्स कॉलेज सिमडेगा



''लुसेन्स एट आर्डेन्स''

''आग और प्रकाश''

स्थापना – 2016

संपादक मंडल

मुख्य संपादक



सीमा खेस्स
सहायक प्राध्यापक

उप – संपादक



निशी तिर्की
सहायक प्राध्यापक



प्रतिमा परधिया
सहायक प्राध्यापक



शशि ज्योति बखला
सहायक प्राध्यापक

टंकक



सन्नी बसन्त किन्डो
शोटर (लाइब्रेरी)

"शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, व्यक्तित्व से परिचय भी है।"

अपनी रचनाएँ, प्रोत्साहन और प्रतिक्रया भेजने के लिए निम्न पत्ते पर संपर्क करें :-
संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा, पोस्ट–खिजरी, थाना – ठेठईटांगर, जिला – सिमडेगा,
पिन–835235 (झारखण्ड)
संपर्क – 8210865183,7654227047

विषय सूची

1. संपादकीय	:	144 –145
2. संदेश		
➢ प्राचार्य	:	146
➢ उप–प्राचार्य सह ट्रेजर्र	:	147
➢ विज्ञान समन्वयक	:	148 –149
➢ आईक्यूएसी समन्वयक	:	150
➢ अनुसंधान समन्वयक	:	151
3. विद्यार्थी लेख	:	152
➢ प्रेमचंद द्वारा रचित ईदगाह	:	153 – 154
➢ शिक्षक जीवन का पथ प्रर्दशन	:	155 –156
➢ ज्ञान की ज्योति जलाते शिक्षक	:	157 – 158
➢ वार्षिक प्रशिक्षण शिविर	:	159 – 161
4. लघु कथा	:	162
➢ मोबाईल दूर एक दिन	:	163 – 166
➢ डिजिटल पिंजरा और आजाद परिंदा	:	167 – 169
➢ आखिरी बेंज के चार धुरंधर	:	170 – 172
➢ मोबाईल से दूरी अपनो से नजदीकी	:	173 – 174
5. निबंध	:	175
➢ हिन्दी रोजगार एवं करियर	:	176 – 177
➢ जीवन में करियर रोजगार	:	178 – 179
➢ हिन्दी भाषा का बदलता स्वरू	:	180 – 181
6. कविता	:	182
➢ गुरू ज्ञान की ज्याति	:	183
➢ गुरू बिन हर शिष्य अधूरा	:	184
➢ मेरी हिन्दी, मेरा गौरव	:	185 – 186
➢ मेरी हिन्दी, मेरा गौरव	:	187
➢ मेरी हिन्दी, मेरा गौरव	:	188 – 189
➢ मेरी हिन्दी, मेरा गौरव	:	190
9. हिन्दी व्याकरण	:	191
10. ई, यी, तथा ये, ए के प्रयोग	:	192
11. विद्यार्थी उपलब्धियां	:	193 –195

संपादकीय

संदेश



मुख्य संपादक

प्रिय पाठकों,

'परिचय' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे महाविद्यालय की शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, एवं खेल गतिविधियों का जीवंत प्रतिबिंब है। यह विद्यार्थियों की प्रतिभा, उपलब्धियों, अनुभवों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों को एक मंच प्रदान करती है। प्रस्तुत अंक में विविध कार्यक्रमों और उपलब्धियों की झलक समाहित है।

शिक्षक दिवस के माध्यम से हमने अपने गुरुजनों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त की। शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन में केवल ज्ञान के स्रोत नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व, विचार और भविष्य को दिशा देने वाले मार्गदर्शक होते हैं।हिंदी दिवस और प्रेमचंद जयंती के आयोजन ने भाषा, साहित्य और सामाजिक सरोकारों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया। हिंदी हमारी संवेदनाओं और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, वहीं प्रेमचंद का साहित्य हमें सामाजिक यथार्थ, मानवीय मूल्यों और संवेदनशीलता के प्रति जागरूक करता है।हमारे महाविद्यालय में एंटी-रैगिंग जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से सुरक्षित, सम्मानजनक और सौहार्दपूर्ण शैक्षणिक वातावरण के महत्व को रेखांकित किया गया। प्रत्येक विद्यार्थी को सम्मान और गरिमा के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। परस्पर सहयोग, सद्भाव और अनुशासन ही स्वस्थ शैक्षणिक संस्कृति की आधारशिला हैं। फुटबॉल टूर्नामेंट और खेल दिवस ने विद्यार्थियों में खेल भावना, अनुशासन, टीमवर्क, नेतृत्व और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहित किया। खेल केवल शारीरिक क्षमता का विकास नहीं करते, बल्कि जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मविश्वास और धैर्य भी प्रदान करते हैं। हमारे लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि इतिहास विभाग की एक छात्रा ने एम.ए. में गोल्ड मेडल प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। यह उपलब्धि विद्यार्थियों के लिए परिश्रम, लगन और उत्कृष्टता की प्रेरणादायी मिसाल है। 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमने राष्ट्र की स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक मूल्यों और देश के प्रति अपने कर्तव्यों को स्मरण किया। स्वतंत्रता केवल अधिकारों का अनुभव नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनने का संकल्प भी है।इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए NCC कैडेट्स की वार्षिक ट्रेनिंग विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व, साहस, आत्मनिर्भरता, सहयोग और राष्ट्रसेवा की भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनी। प्रशिक्षण के अनुभव कैडेट्स के व्यक्तित्व और जिम्मेदारी-बोध को सुदृढ़ करते हैं।

इन सभी गतिविधियों का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है—जहाँ शिक्षा के साथ संस्कार, साहित्य के साथ संवेदना, खेल के साथ अनुशासन, उपलब्धि के साथ विनम्रता और स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी का भाव विकसित हो।

मुझे विश्वास है कि 'परिचय' अपने नाम को सार्थक करते हुए हमारे महाविद्यालय की उपलब्धियों, गतिविधियों और विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा का सुंदर परिचय प्रस्तुत करेगी। यह पत्रिका आने वाले समय में भी विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा पहचानने, उसे निखारने और समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने की प्रेरणा देती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

संदेश



डॉ. फा. रोशन बा:
प्राचार्य

परिचय' एक आह्वान है, उस जीवंत आत्मा का, जो हर व्यक्ति से कराना चाहता है तथा जो सचमुच में ज्ञानदाता है, जिसमें जीवन विद्यमान होता है। प्रत्येक व्यक्ति जो इस परिचित भाषा के माध्यम या अपनी कला के द्वारा अपने में निहित जीवित कलाकृति को रेखांकित करता है वही उनका परिचय है।

प्रिया पाठको, जीवन से परिचय तभी होती है जब हम विश्वास के साथ दूसरों को जानने का प्रयास करते हैं। जीवन की गाथा परिचयों से ही भरा होता है लेकिन परिचय के बाद जीवन में रिश्तों के महत्व में गहराई तभी होता है जब मनुष्य परिचय को महत्व देता और उसे जीता है।

कई बार मनुष्य अपने जीवन संघर्ष की दौड़ में अपने ही जीवन को छोड़ वीरान बन जाता है। वह व्यक्ति पूरी दुनिया से परिचित होते - होते अपने को ही भूल जाता है और समय रहते अपने को कमजोर बना देता है और जीवन रूपी दौड़ को पूरा भी नहीं कर पाता है। जीवन एक सुनहरा अवसर है जो समय के साथ बंधी होती है। समय के साथ परिचित लक्ष्य मनुष्य को अपरिचित उपहार आश्चर्य से भर देता है फिर भी टूटा मन, मनुष्य को खुद के लक्ष्य से दूर कर देता है। जीवन रूपी दौड़ के लिए सतर्कता अति आवश्यक है, अगर व्यक्ति जीवन को अर्थपूर्ण जीना चाहता है।

हमें इस परिचय' में कई सीख मिले हैं जो सिर्फ शब्द मात्र नहीं, अपितु जीवन अनुभव हैं जो प्रत्येक जन को प्रेरित करते हैं। परिचय' हर विद्यार्थी को एक - दूसरे से परिचित कराता है और नए जीवन की कामना करता है। अपने परिचित को जीवित रखें क्योंकि अपने अनुभवों को दूसरों के साथ बांटने से हम अपनों के साथ जुड़ते हैं। अतः ज़रूरी है पहले खुद से परिचित हों और अपना परिचय अपने कर्मों से दें ताकि लोग हमें हमारे कर्मों से पहचानें।

प्रिय विद्यार्थियों, अमर . गाथा लिखने के लिए जगत कल्याण का पथ सबसे उत्तम पथ होता है। अपने सत्कर्मों के साथ जीवन को संभाल कर रखें। समय की कद्र करें और अपने को जरूर समय दें, क्योंकि समय बहुत मूल्यवान एवं बलवान होता है।

संदेश



फा. ब्रूनो टोप्पो
उप - प्राचार्य सह बर्सर

आज के गला काट प्रतिस्पर्धा में केवल डिग्री प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। एआई डिजिटल तकनीक, सूचना की बढ़ती माँग और तीव्र गति से बदलती दुनिया, हमारे लिए एक संकेत है कि जो गंभीरता से सीखेंगे, सोचेंगे और स्वयं को निरंतर विकसित करेंगे, वही आगे बढ़ेंगे और जीवन में सफल होंगे। आज के युग को केवल जानकारी का युग कहना गलत है। यह युग विचार, विवेक और विविध विशेषज्ञता का युग है। अगर हमारे पास दुनिया की सारी जानकारियाँ हों लेकिन हमारे पास उन जानकारियों के सार्थक उपयोग के सही तरीके न रहें तो भविष्य बहुत उज्ज्वल नहीं हो पाएगा।

अतः हमें प्रतिदिन पढ़ना एवं ज्ञान का विस्तार करना चाहिए। हमें प्रतिदिन चिंतन करना और सही तथा गलत, आवश्यक एवं अनावश्यक के बीच के अंतर को समझना चाहिए। प्रत्येक दिन कुछ - न - कुछ लिखना चाहिए, क्योंकि लिखना हमारे विचारों को स्पष्ट, व्यवस्थित, आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाता है। एआई हमारा एक अच्छा नौकर हो सकता है पर एक अच्छे स्वामी नहीं बन सकता। एआई मानव के स्थान को कभी नहीं ले सकता। यह मानव में जिज्ञासा, विवेक, चरित्र और मौलिक सोच विकसित नहीं कर सकती। अपने विद्यार्थी जीवन में हमेशा स्मरण रखिए, जो पढ़ता है वह जानता है, जो चिंतन करता है वह समझता है और जो लिखता है वह अपने विचारों को दुनिया तक पहुँचाने में सक्षम होता है। ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, संवाद - कौशल, सृजनशीलता और मानवीय संवेदना को विकसित करना आज समय की माँग है। आप सभी ऐसे बनें कि आप अवसरों की प्रतीक्षा न करें बल्कि अपनी क्षमता से नए अवसर बना सकें। आपका लक्ष्य नौकरी प्राप्त करने से कहीं अधिक सर्वगुण सम्पन्न, सक्षम, आत्मनिर्भर, संसाधनपूर्ण एवं उपयोगी व्यक्ति बनना होना चाहिए। आप खूब पढ़ें ताकि आपकी दृष्टि व्यापक हो। खूब गहराई से सोचें ताकि आपका विवेक गहरा हो। खूब लिखते रहें ताकि आपका विचार स्पष्ट एवं व्यवस्थित हो। रुचि लेकर सीखें ताकि आपका कौशल बढ़ता जाए तथा दूसरों की ऐसी सेवा करें ताकि आपकी सफलता दूसरों के जीवन को भी बेहतर बनाए। आपकी छोटी - छोटी अच्छी आदतें आपके भविष्य निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। संपादक मंडल, सभी लेखकों एवं पाठकों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। यह पत्रिका कई लोगों के जीवन परिवर्तन का एक माध्यम बनेगा।

संदेश



डॉ. फा. नबोर लकड़ा, एस. जे.
विज्ञान समन्वयक

कर्म और कामयाबी

जीवन में हम विभिन्न प्रकार के लोगों से परिचित होते हैं—कुछ खुश, कुछ दुखी, कुछ सफल और कुछ असफल। प्रश्न उठता है कि सभी लोग सफल होना चाहते हैं, परंतु सभी को सफलता क्यों नहीं मिलती? सपने और इच्छाएँ हर मनुष्य के जीवन में होती हैं, परंतु कुछ ही लोग कामयाबी हासिल कर पाते हैं। एआई (AI) के इस युग में ऐसा लगता है कि मनुष्य के लिए आगे बढ़ना और भी चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। वर्तमान शिक्षा नीति का प्रयास है कि विद्यार्थी विभिन्न कौशल (Skills) सीखें और अपने जीवन में कुछ कर सकें, लेकिन इसका प्रभाव भी अभी सीमित है।

बेरोजगारी की समस्या हमेशा से रही है। उतने रोजगार उपलब्ध नहीं हैं कि सभी लोगों को उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार काम मिल सके। अतः रोजगार के क्षेत्र में प्रतियोगिता बनी रहेगी और कुछ ही लोग अपनी पसंद की नौकरी प्राप्त कर सकेंगे। कहा जाता है कि सफलता के लिए कर्म और आशीर्वाद, दोनों का सहयोग आवश्यक है।

कर्म कामयाबी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जिस क्षेत्र में कोई व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है, उसे उसी क्षेत्र से संबंधित ज्ञान और कौशल प्राप्त करना चाहिए। यह भी देखा गया है कि ज्ञान और कौशल होने के बावजूद सभी लोग सफल नहीं हो पाते हैं और कई लोगों को नौकरी नहीं मिलती। बेरोजगारी की समस्या हमेशा से रही है और आगे भी बनी रह सकती है। दुनिया में इस प्रकार की परिस्थितियाँ हमेशा रही हैं और आगे भी आती रहेंगी। तो क्या हमें निराश होकर जीना है?

जीवन हमें यह सीख देता है कि आशावादी लोग कुछ न कुछ कर ही लेते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपना कर्म करते रहें। कामयाबी निश्चित रूप से मिलेगी। कहा गया है—"कामयाबी सुबह जैसी होती है, माँगने से नहीं, जागने से मिलती है।

संदेश



रेनी अलमा लकड़ा
समन्वयक
आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)

प्रिय विद्यार्थियों एवं आदरणीय शिक्षकगण,

जुलाई से सितंबर तक ये तीन माह पर्वों और राष्ट्रीय स्मृतियों से परिपूर्ण होते हैं। गुरु पूर्णिमा, कारगिल विजय दिवस, स्वतंत्रता दिवस, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी, शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस और गणेश चतुर्थी जैसे अवसर हमारी सांस्कृतिक चेतना को जागृत करते हैं तथा हमारे शैक्षिक जीवन को नई दिशा प्रदान करते हैं।

गुरु पूर्णिमा और शिक्षक दिवस हमें गुरु शिष्य परंपरा के प्रति श्रद्धा और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के आदर्शों का स्मरण कराते हैं। कारगिल विजय दिवस हमारे वीर सैनिकों के अदम्य साहस और बलिदान की गाथा सुनाता है, जबकि स्वतंत्रता दिवस हमें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग की याद दिलाता है। इनसे प्रेरणा लेकर विद्यार्थी अनुशासन, ईमानदारी और परिश्रम के बल पर राष्ट्र - निर्माण में सहभागी होता है।

रक्षाबंधन परस्पर स्नेह और सुरक्षा के दायित्व का प्रतीक है। जन्माष्टमी सत्य, धर्म और निष्काम कर्म की प्रेरणा देती है, तो गणेश चतुर्थी विघ्नों को दूर कर बुद्धि और विवेक के साथ आगे बढ़ने का संदेश देती है। हिंदी दिवस हमें अपनी राजभाषा के गौरव तथा उसके सम्यक प्रयोग के प्रति सजग करता है।

शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि आप अपने आचरण और अध्यापन द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का संचार करें तथा नवाचार एवं सृजनशीलता को निरंतर प्रोत्साहित करें।

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि आप इन पर्वों को केवल उत्सव न मानकर जीवन - मूल्यों के रूप में अपनाएँ और शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर निरंतर अग्रसर रहें।

आईक्यूएसी की ओर से सभी को पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं।

संदेश



डॉ. अनिमेष रॉय
समन्वयक/ निदेशक
अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ (RDC)

साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि मनुष्य और समाज के बीच संवाद का सशक्त माध्यम है। परिचय' अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करते हुए विचार, सृजन और संवेदना के विविध आयामों से पाठकों का परिचय कराए - यही मेरी शुभकामना है। यह पत्रिका युवा मन में जिज्ञासा, विवेक और सृजनशीलता को प्रोत्साहित करते हुए ज्ञान एवं मानवीय मूल्यों की नई दिशाएँ उद्घाटित करे।

विद्यार्थी लेख

प्रेमचंद द्वारा रचित ईदगाह' कहानी की प्रासंगिकता
(प्रेमचंद जयंती के अवसर पर प्रस्तुति)



अंजली इंदवार
हिंदी विभाग (सेम - IV)
सत्र: 2023 - 27



प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी ईदगाह' यह सिद्ध करती है कि अभाव और परिस्थितियाँ उम्र नहीं देखतीं और छोटे बच्चों को समय से पहले परिपक्व बना देती हैं। आज के समय में हम हामिद जैसे बच्चों को देख भी सकते हैं और कुछ मायने में नहीं भी देख सकते हैं। यहाँ दोनों पक्षों का जिक्र किया जा रहा है .

हम आज भी हमीद जैसे बच्चों को देख सकते हैं क्योंकि आज भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा गरीबी और संघर्ष में जी रहा है, ऐसे में हामिद का चरित्र आज भी जीवित है।

बाल मजदूर और अनाथ बच्चे जो झुग्गी झोपड़ियों, चाय की दुकानों और ढाबों पर काम करते हैं, इन बच्चों में आज भी हमीद को देखा जा सकता है। यह बच्चे अपनी कमाई से खिलौने नहीं खरीदते हैं, बल्कि अपने परिवार का पेट पालने के लिए जो पैसे कमाते हैं उस पैसे को अपने माता.पिता को सौंप देते हैं तथा जिन परिवारों में माता.पिता नहीं है, वहाँ छोटे बच्चे ही बूढ़े दादा - दादी या अपने छोटे भाई बहनों की जिम्मेदारी उठा रहे हैं, वैसे बच्चे अपनी इच्छाओं का त्याग कर हामिद की तरह अपने परिवार को प्राथमिकता देते हैं तथा समय से पहले समझदार बन जाते हैं।

आज भी अभावग्रस्त बच्चों में परिस्थितियों के कारण उनका बचपन गायब हो जाता है और वह बड़ों जैसी गंभीर बातें और समझदारी दिखाने लगते हैं।

आज भी हम हमीद जैसे बच्चों को नहीं देख पाते हैं क्योंकि शहरी मध्यम वर्ग, उच्चवर्ग और बदलती सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के कारण हमें बच्चों में हामिद जैसे निश्चल त्याग. भावना दिखना मुश्किल हो गया है।

तकनीक और स्क्रीन की दुनिया होने के कारण जो परिवार पहले शाम को साथ बैठता था, लेकिन अब हर कोई अपने-अपने फोन और लैपटॉप में व्यस्त रहते हैं। आज के बच्चे दोस्तों से ज्यादा जुड़ाव महसूस करते हैं और माता-पिता तथा परिवार के साथ बहुत कम समय व्यतीत करते हैं। आज का दौर विज्ञापन और दिखावे का हो गया है, आज बच्चों के सामने खिलौने और फास्ट फूड के अनगिनत विकल्प हैं। ऐसे में बच्चों के भीतर सब कुछ पाने की चाह होती है ना कि हामिद की तरह आत्म - नियंत्रण रखकर त्याग करने की।

आज इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण बच्चे अपने ही दुनिया में सिमट गये हैं। आधुनिक युग के बच्चे अकेले रहना ज्यादा पसंद करते हैं तथा उनमें सामूहिक खुशी तथा दूसरों के दर्द को समझने की संवेदनशीलता कम होती जा रही है। एकल परिवार के बढ़ने से बच्चे दादा. दादी या बुजुर्गों के त्याग और उनके दर्द (जैसे अमीना की जलती उंगली) को करीब से महसूस नहीं कर पाते हैं।

आज का दौर विज्ञापन और बाजारवाद से संचालित है तथा आज के बच्चे ब्रांडेड चीजों के प्रति आकर्षित होते हैं। हामिद ने अपनी इच्छाओं को दबाकर चिमटा को चुना था लेकिन आज सबसे पहले अपनी खुशी को महत्व दिया जाता है।

आज बच्चों पर पढ़ाई, अच्छे मार्क्स और करियर का बहुत कम उम्र से ही भारी मानसिक दबाव रहता है। इस भाग - दौड़ में वे केवल अपनी प्रगति के बारे में सोचना सीखते हैं, जिससे उनके भीतर निस्वार्थ भाव और सामाजिक संवेदनाएं पीछे छूटती जा रहीं हैं। उच्च वर्ग के माता-पिता बच्चों को बिना मांगे ही हर सुविधा दे देते हैं, जिसके कारण अभाव तथा संघर्ष का अनुभव नहीं होता और वे पैसों का मूल्य नहीं समझ पाते। हामिद की समझदारी उसकी गरीबी और संघर्ष की उपज थी।

ऐसा नहीं है कि आज के बच्चों में दिल या भावनाएं नहीं हैं अंतर सिर्फ इतना है कि आज के माहौल ने उनकी प्राथमिकताओं को बदल दिया है। यदि हम बच्चों को सही संस्कारए सादगी और बुजुर्गों का साथ मिल जाए तो आज हर बच्चे के भीतर छुपा हुआ हमीद बाहर आ सकता है। गरीबी और संघर्ष के बीच जी रहे लाखों बच्चों में आज भी हामिद की आत्मा जिंदा है।

****

शिक्षक: जीवन का पथ - प्रदर्शक



वर्षा कुमारी
राजनीति विज्ञान विभाग (एम. ए., सेम - IV)
सत्र: 2024 - 26



शिक्षक समाज के रीढ़ होते हैं, जो विद्यार्थियों के जीवन को आकार देने और उन्हें सही दिशा प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। शिक्षक वह करिश्माई व्यक्तित्व है जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। वह अपने शिष्यों को नई दिशा, नए विचार प्रदान करता है तथा उन्हें सही और गलत के बीच का भेद समझाता है।

शिक्षक उस सड़क के समान है, जो स्वयं तो एक स्थान पर स्थिर रहती है, लेकिन अपने विद्यार्थियों को उनकी नई मंजिल तक पहुँचाती है। वह विद्यार्थियों के सपनों को नया मुकाम देती है और उनके जीवन को नया सफर प्रदान करते हैं।

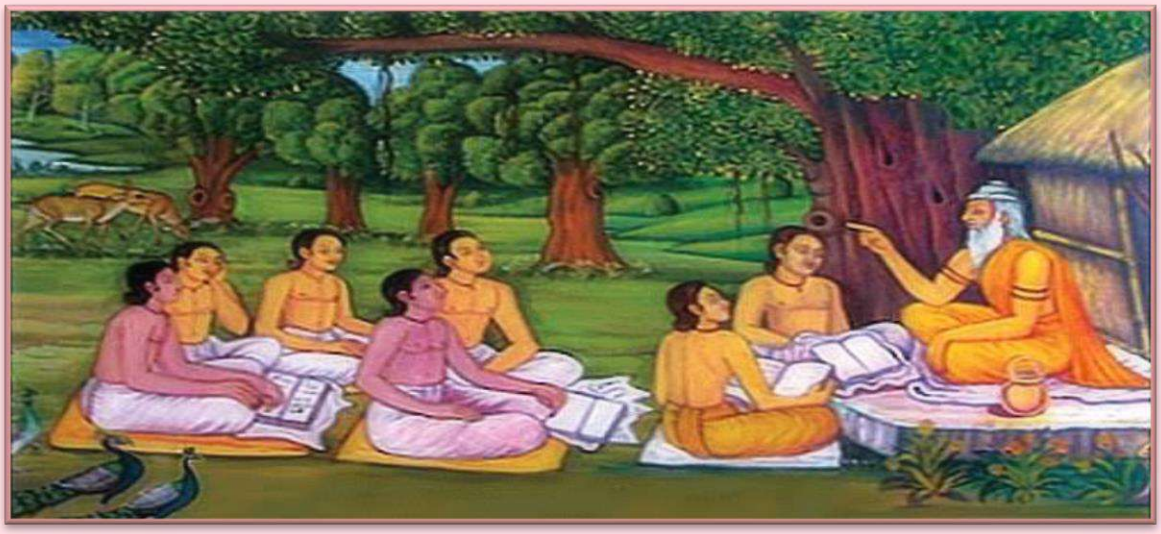
शिक्षक स्वयं एक स्थान पर रहकर भी अपने ज्ञान और मार्गदर्शन के माध्यम से न जाने कितने विद्यार्थियों को उनकी मंजिल तक पहुँचाते हैं।

शिक्षक वह व्यक्ति है जो अपने विद्यार्थियों में कभी भेद नहीं करते, उनके लिए प्रत्येक विद्यार्थी समान होते हैं। शिक्षक का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी की प्रतिभा को पहचानना और उसे आगे

बढ़ने का अवसर देना होता है। वह नासमझ और नादान विद्यार्थी के भीतर भी ज्ञान का दीप जलाता है और उसे अपने जीवन में आगे बढ़ने के योग्य बनाता है।

शिक्षक समाज का निर्माता है, क्योंकि वह डॉक्टर, इंजीनियर कलेक्टर, वैज्ञानिक और अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तियों के निर्माण के आधारशिला रखता है। किसी भी सफल व्यक्ति की सफलता के पीछे उसके शिक्षकों के ज्ञान, मार्गदर्शन और प्रेरणा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस अर्थ में शिक्षक केवल विद्यार्थियों को पढ़ाते नहीं, बल्कि भविष्य के लिए समाज का भी निर्माण करते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन से नकारात्मक विचारों को दूर कर उनमें सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार करते हैं। वह अपने ज्ञान, शिक्षा और सकारात्मक विचारों के माध्यम से विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच विकसित करते हैं तथा उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।



माता . पिता कभी.कभी अपने बच्चों में तुलना कर सकते हैं या उनमें से किसी एक को अधिक लाड़ प्यार दे सकते हैं, लेकिन शिक्षक नहीं। एक शिक्षक के लिए उसके सभी विद्यार्थी बराबर हैं। वह अपने प्रत्येक विद्यार्थी को सफल होते देखना चाहता है। वह विद्यार्थियों की कमियों को समझ कर उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं और उसकी क्षमताओं को पहचान कर उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि मार्गदर्शकए प्रेरक और भविष्य का निर्माता होता है। वह अपने ज्ञान की ज्योति से विद्यार्थियों के जीवन को प्रकाशित करता है, और

उन्हें सपनों की मंजिल तक पहुँचाने का मार्ग दिखाता है। इसलिए शिक्षक को वास्तव में समाज की रीढ़ और राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा जाता है।

ज्ञान की ज्योति जलाते शिक्षक



नीलिमा बांडो
इतिहास विभाग (सेम - III)
सत्र: 2024 - 28

हमारे देश में गुरु को भगवान से भी ऊपर माना जाता है। शिक्षक हमारे जीवन के वे मार्गदर्शक हैं, जो अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वे केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि हमारे व्यक्तित्व, विचारों और चरित्र का निर्माण भी करते हैं। हमारे जीवन में माता-पिता के बाद शिक्षक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसलिए शिक्षक को समाज का भविष्य निर्माता कहा जाता है।

भारत में प्रत्येक वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। यह दिन महान शिक्षाविद, दार्शनिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर



मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन का जीवन शिक्षा और ज्ञान के प्रति समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है।

एक विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विद्यार्थी जब विद्यालय या महाविद्यालय में प्रवेश करता है, तब उसके सामने अनेक चुनौतियाँ होती हैं। शिक्षक

उसे उसकी क्षमताओं को पहचानने, लक्ष्य निर्धारित करने और अपने सपनों को पूरा करने की दिशा दिखाते हैं।

एक अच्छे शिक्षक की पहचान केवल उनके विषय - ज्ञान से नहीं होती, बल्कि उनके व्यवहार, धैर्य, संवेदनशीलता और विद्यार्थियों के प्रति जिम्मेदारी से भी होती है। वे विद्यार्थियों की कमियों को समझ कर उन्हें सुधारने का अवसर देते हैं और उनकी प्रतिभा को पहचान कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

शिक्षक दिवस हमें अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर देता है। हमें अपने शिक्षकों से प्राप्त ज्ञान और संस्कारों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए तथा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझना चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक वास्तव में भविष्य के निर्माता हैं। वे विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ विचार, संस्कार और जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं। उनके मार्गदर्शन से विद्यार्थी न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाते हैं, बल्कि एक बेहतर समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी योगदान देते हैं।

" शिक्षक वह दीप है, जो स्वयं प्रकाश बनकर विद्यार्थियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाते हैं।

****

वार्षिक प्रशिक्षण शिविर (ATC Camp): अनुशासन, साहस और आत्मविश्वास की अविस्मरणीय यात्रा



सुरभि एक्का
हिन्दी विभाग (सेम- III)
सत्र: 2024 - 28

मैं कैडेट सुरभि एक्का NCC में शामिल होने के बाद एटीसी कैंप में जाना, मेरे लिए एक नया और यादगार अनुभव था। एटीसी कैंप दिनांक 29 अगस्त से 07 सितम्बर, 2026 तक B. N. Jalan College, Sesai में आयोजित हुआ था। यह मेरा पहला एटीसी कैंप था, इसलिए मेरे मन में उत्साह के साथ. साथ थोड़ी घबराहट भी थी।



मेरे लिए पहला अवसर था जब मुझे कैडेट्स की जिम्मेदारी दी गई थी। सिमडेगा से निकलते वक्त मन में यही सवाल था कि क्या मैं इस जिम्मेदारी को सही से निभा पाऊंगी।

एटीसी कैंप में जाने से पहले मैंने कैंप के लिए आवश्यक सामान तैयार किया - NCC की यूनिफॉर्म, जूते, कपड़े, पानी की बोतल, आवश्यक सामान और अन्य उपयोगी वस्तुएँ व्यवस्थित करके रखीं। 29 अगस्त 2026 की सुबह 6:30 बजे हम सभी कैडेट्स बस द्वारा सिमडेगा से सिसई के लिए रवाना हुए। बस में एस. एस. हाई स्कूल सिमडेगा के जूनियर कैडेट्स और संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा के कैडेट्स हम सभी एक बस में थे और सभी की आँखों में एक ही जोश था - NCC कैंप का।

सुबह करीब 9:30 बजे हम सभी कैंप पहुँचे। कैंप पहुँचने के बाद सबसे पहले आवश्यक प्रक्रिया पूरी की गई। इसके बाद रिफ्रेशमेंट मिला फिर हमें कमरा दिया गया और कैंप के नियमों के बारे में जानकारी दी गई। पहले ही दिन समझ आ गया था कि यहाँ हर काम समय पर और अनुशासन में होता है।

पहले दिन का वातावरण मेरे लिए बिल्कुल नया था। अलग.अलग स्थानों से आए हुए कैडेट्स को एक साथ देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। धीरे धीरे नए कैडेट्स से परिचय हुआ और कुछ ही समय में दोस्ती होने लगी।

शुरुआत के दो दिन मुश्किल थे। सुबह 4:00 बजे उठना और 5:40 तक पीटी के लिए दौड़ना, धूप में ड्रिल करना आदि। घर की तरह सुविधा नहीं थी। सबसे बड़ी चुनौती यह थी की सभी के साथ तालमेल कैसे बैठाया जाए? क्योंकि हर कॉलेज के कैडेट्स का स्वभाव अलग था।

बैंक में ड्रिल और परेड का विशेष महत्व था लेकिन संत जेवियर्स कॉलेज, सिमडेगा के कैडेट्स को गाइड करने वाले कोई नहीं थे इसलिए हमें जितना सीखना था उतना नहीं सीख पाए। परेड के दौरान हमें एक साथ कदम मिलाकर चलनाए आदेशों का पालन करना और अपने समूह के साथ तालमेल बनाए रखना आदि सीखने को मिला। इससे मेरे अंदर आत्मविश्वास और एकता की भावना बढ़ी।

एटीसी कैंप में केवल परेड ही नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला। समूह में काम करना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल और अन्य प्रशिक्षण गतिविधियों ने कैंप को और भी रोचक बना दिया। इन गतिविधियों के माध्यम से मैंने सीखा कि किसी भी कार्य को अकेले करने की अपेक्षा मिलजुल कर करने से बेहतर परिणाम प्राप्त किया जा सकते हैं।

यदि सीनियर के रूप में देखा जाए तो मेरी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई थी। मुझे जूनियर कैडेट्स की सहायता करने, उन्हें आवश्यक निर्देश देने और अनुशासन बनाए रखने में सहयोग करने का अवसर मिला। मैंने महसूस किया की एक अच्छे सीनियर का काम केवल आदेश देना नहीं, बल्कि अपने जूनियर्स का मार्गदर्शन और सहयोग करना भी है।



06 सितंबर, 2026 को सांस्कृतिक कार्यक्रम होने वाला था इसके लिए सभी स्कूल कॉलेज के कैडेट्स अच्छी तरह से तैयारी किए थे। तभी एक दुखद खबर मिली कि वर्तमान शिक्षा मंत्री श्री सुदिव्य कुमार सोनू का निधन हो गया जिसके कारण सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थगित की गई। इसके बाद पुरस्कार वितरण किया गया और फिर समूह फोटो के साथ समापन किया गया।

कैंप का अंतिम दिन आते - आते सभी कैडेट्स के बीच अच्छी मित्रता हो गई थी। कैंप समाप्त होने की खुशी के साथ-साथ वहाँ से जाने का दुख भी था। इतने दिनों तक साथ रहने वाले साथी, कैंप की गतिविधियाँ हमारे लिए एक यादगार के रूप में बन चुकी थी।

एटीसी कैंप ने मुझे जीवन के कई महत्वपूर्ण गुण सिखाए :-

- अनुशासन का महत्व।
- समय की पाबंदी।
- टीम के साथ मिलकर काम करना।
- आत्मविश्वास बढ़ाना।
- कठिन परिस्थितियों में धैर्य रखना।
- दूसरों की सहायता एवं सम्मान करना।
- जिम्मेदारी की भावना विकसित करना।

इस तरह मेरे लिए एटीसी कैंप केवल कुछ दिनों का प्रशिक्षण नहीं था, बल्कि अपने व्यक्तित्व को निखारने और स्वयं को बेहतर बनाने का एक महत्वपूर्ण अवसर था। इस कैंप की यादें हमेशा मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहेंगी।

****

लघु कथाएँ

मोबाइल से दूर एक दिन



जेन रोजलीन बारला
अर्थशास्त्र विभाग(सेम- VIII)
सत्र : 2022 - 26

उस दिन रविवार था वह दिन राहुल के लिए बहुत खास था क्योंकि उस दिन उसका जन्मदिन था और वह चाहता था कि उसका 18 वाँ जन्मदिन उसके पहले मनाए गए जन्मदिवस से ज्यादा अच्छा और यादगार हो। वह बिस्तर पर लेट कर यह सोचने लगा कि मैं अपने जन्मदिन को यादगार बनाने के लिए क्या कर सकता हूँ? उसके मन में तरह.तरह के विचार आए। कभी वह सोचता किसी अच्छी जगह पर जाकर अपना जन्मदिन मनाया जाए या अपने सभी मित्रों को घर पर बुलाकर अपना जन्मदिन किसी उत्सव की तरह मनाया जाए।

किन फिर राहुल ने सोचा क्यों ना मैं एक दिन के लिए खुद को मोबाइल से दूर रखूँ। यह विचार उसे पसंद आया। उसने अपने मोबाइल को स्विच ऑफ कर दिया वह यह जानना चाहता था कि कौन.कौन उसे स्वयं उसके घर पर आकर जन्मदिन की बधाई देते हैं। हर दिन की तरह वह उस दिन भी सुबह 6:00 बजे उठ जाता है उस दिन रविवार था और स्कूल की छुट्टी थी। सुबह उसने मोबाइल ऑन नहीं किया था इसलिए फोन की स्क्रीन से होने वाली चमक का प्रभाव उसकी आँखों पर दिखाई नही पड़ रहा था।

राहुल उठकर धीरे-धीरे अपनी खिड़की के पास गया उसने देखा कि सूरज धीरे-धीरे निकल रहा है, पेड़ - पौधों को जगा रहा है। चिड़िया चहचहा रही है। वह इस सुंदर दृश्य को देखकर आश्चर्य चकित हो जाता है। उसने ऐसा दृश्य केवल अपने मोबाइल में, सोशल मीडिया, रील्स में ही देखा था। इतने में ही किचन से उसकी मम्मी ने उसे पुकारा -

“ राहुल बेटा नाश्ता तैयार है।

राहुल फ्रेश होकर नीचे किचन में आया। नाश्ते की टेबल पर उसकी छोटी बहन रिया और उसके पिता बैठे थे। उसके पिता अखबार पढ़ रहे थे और उसकी बहन सूखे पत्तों को पेपर पर

चिपका रही थी। राहुल ने देखा कि रिया सूखे पत्तों को पेपर पर चिपकाकर उसे एक पेड़ का रूप दे रही थी। उसने उत्सुकता से पूछा-

"रिया तुम क्या बना रही हो?
रिया ने उत्तर दिया-
"वो मैं अपने प्रोजेक्ट को पूरा कर रही हूं।

फिर सब ने मिलकर नाश्ता किया। आज उसकी मम्मी ने उसका पसंदीदा व्यंजन डोसा बनाया था। बिना मोबाइल की स्क्रीन के राहुल को आज सब नया . सा लग रहा था। उसने ध्यान से देखा तो पता चला कि वास्तविक दुनिया सच में बहुत सुंदर है। उसने खिड़की के बाहर देखा, जहाँ पर उसकी माँ ने कुछ समय पहले फूल लगाए थे वह यह देखकर अन्दर ही अंदर मुस्कुराने लगा कि अभी उन झाड़ियों में छोटे - छोटे गुलाबी रंग के फूल आ रहे हैं तथा सूर्यमुखी का फूल भी चमक रहा है। वह नाश्ते के बाद अपने छोटे बगीचे में गया। जहाँ पर उसकी मम्मी ने फूलों के साथ - साथ कुछ सब्जियाँ भी उगाई थीं।

उसकी मम्मी ने उसे बताया कि आज शाम को वह यहीं से सब्जी तोड़कर सबके लिए खाना बनाएगी। राहुल ने उत्सुकता से पूछा .

" क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?

मम्मी ने उत्तर दिया - " हाँ, बिल्कुल।

वह खुश हो गया। वह अपने आस - पास की हरियाली को देखकर काफी खुश था क्योंकि उसे लगता था कि यह सब केवल काल्पनिक दुनिया में ही संभव है और वास्तविक दुनिया में यह सब होना नामुमकिन है।

दोपहर में जब वह घर से बाहर निकला। बाहर हल्की बारिश हो रही थी और वह भींगते हुए घर के सामने बने पार्क में चला गया, जहाँ पर उसकी उम्र के बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। वह उन्हें जानता भी नहीं था फिर भी वह उनके साथ खेलना चाहता था। वह चुपचाप बैठकर उन्हें देखने लगा, तभी उनके पैरों पर उसे दर्द का अनुभव हुआ। तब वह अपने ख्यालों से बाहर आया, उसने ध्यान से देखा तो पता चला कि वह बॉल था। बच्चे चिल्ला कर उससे बॉल मांग रहे थे वह उन्हें बॉल वापस देने चला गया। तभी एक बच्चे ने उसका नाम पूछा।

" राहुल, मेरा नाम राहुल है।
" क्या तुम हमारे साथ खेलोगे? " - एक बच्चे ने कहा।
" हाँ, हाँ क्यों नहीं - राहुल ने जवाब दिया।

फिर सब मिलकर खेलने लगे। पहली बार बिना किसी परेशानी के नए दोस्त बनाकर राहुल को बहुत अच्छा लग रहा था। धीरे.धीरे सूरज ढलने लगा सभी बच्चे एक.एक करके अपने घर जाने

लगे। तभी राहुल को याद आया कि उसने अपने मम्मी को सब्जियाँ तोड़ने में मदद करने की बात की है।

फिर वह घर आया उसने देखा कि उसकी मम्मी घर में बने छोटे बगीचे की तरफ जा रही है। राहुल तुरंत अपने हाथ - पैर धोकर अपनी मम्मी के पास चला गया उसकी मम्मी ने उसे सभी सब्जियों और फूलों के नाम बताए। हरी सब्जियाँ, लाल टमाटर, सुंदर बैंगन देखकर वह प्रसन्न हो उठा। तभी उसने देखा कि दरवाजे के पास कोई उसे पुकार रहा है। उसकी मम्मी ने बताया कि यह उसके दादाजी और दादी माँ हैं जो राहुल के जन्मदिन पर उसके घर आए हैं। राहुल दौड़कर उनके पास गया उसके दादाजी के हाथ पर एक बड़ा सा थैला था जिसमें दो आम के पेड़ थे उन्हेंने उसे राहुल को दिया और कहा-

“यह तुम्हारे जन्मदिन का उपहार है।



राहुल पहली बार उन पेड़ों को देखकर खुश हुआ क्योंकि वह अक्सर अपना जन्मदिन किसी रेस्तरां या पार्क में ही मनाता था और उसके सभी दोस्त उसके लिए आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक चीजें ही उपहार में लाते थे लेकिन इस बार सब अलग था।

रात को राहुल की मम्मी ने सभी के लिए खाना बनाया उसने घर पर ही राहुल के लिए छोटा - सा केक बनाया। यह पहली बार था जब राहुल का जन्मदिन घर पर ही मनाया जा रहा था और बाहर से किसी भी वस्तु को नहीं खरीदा गया था। उसका यह जन्मदिन बिना किसी शोर के शांतिपूर्वक मनाया जा रहा था। यह सब देखकर राहुल को बहुत अच्छा लगा। उसने अपनी माँ का बनाया हुआ केक काटा और उपहार में उसे सभी ने छोटे पौधे और पेड़ दिए।

रात को जब राहुल अपने बिस्तर पर गया तो उसने ध्यान दिया कि उसका मोबाइल अभी भी बिस्तर पर ही है उसे एहसास हुआ कि बिना मोबाइल के आज का पूरा दिन उसके लिए कितना अच्छा था यह उसका सबसे यादगार जन्मदिन था।

उसने मोबाइल ऑन किया तो देखा कि उसमें बहुत सारे नोटिफिकेशंस थे लेकिन उसे पढ़ने या उस मैसेज पर ध्यान देने के बजाय उसने मोबाइल ऑफ किया और लेट गया। वह आज दिन भर में हुए सभी गतिविधियों को याद करने लगा। उसने धीरे से कहा.

" सचमुच यह अब तक का मेरा सबसे अच्छा मनाया जाने वाला जन्मदिवस है, मैं इसे हमेशा याद रखूँगा। इन सारी चीजों को याद करते-करते वह सो गया।

उसे पूरी तरह यह अनुभव हो गया था कि वास्तविक दुनिया काल्पनिक दुनिया से बहुत अधिक सुंदर है जिसे वह पूरी तरह अपने शब्दों में नहीं बता सकता है। वह केवल इसे देखकर अनुभव ही कर सकता है।

****

डिजिटल पिंजरा और आजाद परिंदा



सोफिया किंडो
विभाग (सेम - VIII)
सत्र: 2022 – 26

"कांच के इस परदे से जरा बाहर निकलकर देख, ऐ इंसान! तेरी बंद मुट्ठी में नहीं, अपनों के साथ में है जहान।



सुबह के सात बज रहे थे कुदरत अपनी सुंदरता बिखेर रही थी, सूरज की मनमोहक किरणें खिड़की से प्रवेश करती हुई मेरे चेहरे पर पड़ रही थी, किन्तु मुझे इन सब से कोई मतलब ना था। जैसे ही मेरी आँखें खुलीं मैं अपनी आँखें मलते हुए बिस्तर पर तकिए के नीचे दबे स्मार्टफोन की नीली रोशनी को ढूंढ रही थी और हाथ में आते ही मैंने अपना इंटरनेट ऑन किया। इंटरनेट ऑन करते ही मैने अपने फेसबुक, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम के नोटिफिकेशन चेक करने लगी ।

तभी अचानक मेरे कमरे में दादाजी अपने हाथ में अखबार लिए हुए प्रवेश करते हैं और मुझे रीढ़ की हड्डी टेढ़ी किए हुए अपनी उंगलियों से रील्स स्क्रॉल करते हुए मग्न पाया। वे मेरे पास आए और मुस्कुराते हुए कहने लगे-

" बेटा, आज रविवार है। क्या तुममें मेरी एक चुनौती स्वीकार करने की हिम्मत है?"
मैंने स्क्रीन पर से नजर हटाते हुए दादाजी की ओर उत्सुकता से देखा और पूछा.
" कैसा चुनौती दादाजी?"
दादाजी ने कहा-

" आज तुम्हें पूरे दिन अर्थात चौबीस घंटे मोबाइल से दूर रहना होगा। क्या तुम्हें यह चुनौती स्वीकार है?

मैंने खुशी.खुशी दादा जी की इस चुनौती को स्वीकार कर लिया और दादाजी की बातों में हामी भर दी। ऐसा करते हुए मैं काफी खुश थी।

शुरुआत में तो मुझे ऐसा करना काफी अच्छा लगा और 2 घंटे आराम से कट गए किंतु दस बजते - बजते मेरे अंदर एक अजीब सी हलचल होने लगी। मेरा ध्यान मोबाइल पर ही था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सारी दुनिया से मेरा इंटरनेट कनेक्शन टूट गया हो तथा मेरे मन -दिमाग में यह ख्याल चल रहा था कि मेरे मोबाइल में इंस्टाग्राम और फेसबुक पर क्या नोटिफिकेशन आया होगा? व्हाट्सएप ग्रुप पर क्या नोटिस आयी होगी ?

किंतु फिर भी मैंने अपने मन को शांत करने की कोशिश की। दोपहर के बारह बज रहे थे जिस समय मेरी यह चिंता अपने चरम पर थी। मुझे बेचैनी हो रही थी। मैं अपने कमरे में शांत बैठकर घड़ी की सुइयों को घूमते हुए देख रही थी, किंतु घड़ी भी कछुए की चाल से चल रहा था। मानो घड़ी पहले तो तेज चलती थी किंतु जब से इस चुनौती को स्वीकार किया है तब से घड़ी ने भी अपनी गति मंद कर दी हो। कभी मैं कमरे से बाहर निकल कर बरामदे की तरफ जाती, फिर बरामदे आँगन, आँगन से अपने कमरे की तरफ आती। किंतु मेरा मन मेरे मोबाइल पर ही टिका था।

दोपहर का समय था। आज मैं पहली बार बिना मोबाइल के डाइनिंग टेबल पर खामोश होकर भोजन का एक-एक निवाला मुँह में डाल रही थी। यह मेरे लिए सबसे खास बात थी। आज मैंने पहली बार माँ के हाथ के बनाए खाने के स्वाद पर गौर किया। भोजन काफी स्वादिष्ट था। आज मैंने पाया कि माँ के चेहरे पर ममता की अजीब चमक थी। आज मुझे भोजन करते हुए काफी अच्छा अनुभव हो रहा था।

खाना खाकर मैं अपने कमरे में चली गई और जब कमरे में कुछ घंटे व्यतीत करने के बाद बोरियत महसूस हुई तो मैं अपने दादाजी के पास चटाई पर बैठ गई और उनसे अपने पुराने किस्से की जिद्द करने लगी। दादाजी ने अपने बचपन की शरारतें और अपनी प्रेम की कथा सुनाई। इन सारी बातों को सुनकर मैं खूब ठहाका लगाई। मेरी हँसी से सारा घर आँगन गूंज उठा।

कुछ पल दादाजी से व्यतीत करने के बाद मैं अपनी सहेलियों के साथ मैदान में बैडमिंटन खेलने चली गई। आज ऐसा पहली बार हुआ कि मेरे हाथ पर मोबाइल नही था। इससे पहले जब भी मैदान जाती अपने साथ मोबाइल लेकर आती और हमेशा सेल्फी लेने में मस्त रहती। खूब मस्ती करने के बाद शाम ढलने से पहले घर वापस आ गई।

आज की रात इसी तरह खुशी . खुशी कट गई। आज रात मुझे काफी अच्छी नींद आई। सुबह के वक्त जब मेरी आँखें खुली, मुझे काफी अच्छा महसूस हो रहा था। अब तक करीब 24 घंटे पूर्ण हो चुके थे। मैंने अलमारी से जैसे ही मोबाइल निकाला और इंटरनेट चालू किया, तो इस 24 घंटे के अंतराल में मेरे फोन पर व्हाट्सअप से 150 संदेश और फेसबुक तथा इंस्टाग्राम से 700- 750 लाइक्स थे।



किंतु मुझे इन सबसे कोई आश्चर्य ना हुआ चूंकि 24 घंटे के अंतराल में मैंने मोबाइल की गुलामी से खुद को आजाद कर लिया था। मैंने इंटरनेट बंद किया और अपने फोन को टेबल पर रख दिया। बिस्तर से निकलते हुए मैंने खिड़की के बाहर झांका तो पाया कि प्रकृति कितनी सुंदर प्रतीत हो रही थी। सूरज अपनी रंगीन किरणें बिखेर रही थी। पेड़ों पर पक्षियाँ चहचहा रही थीं। मैंने आज पहली बार प्रकृति को इतना गौर से निहारा और मुझे काफी सुकून मिला। वरना मैं हमेशा सुबह उठकर सबसे पहले फोन के नोटिफिकेशन चेक करने लग जाती।

मोबाइल हमारी सुविधा के लिए है, हमें इसका गुलाम नहीं बनना चाहिए। वास्तविक खुशी और सुकून अपनों के साथ बिताए पलों व बातचीत में होती है।

“ छोड़कर आभासी दुनिया की जंजीरें,
अपनों से दिल मिलाते हैं,
काँच के इस बंद परदे को तोड़कर,
जिंदगी को खुशनुमा बनाते हैं।

****

आखिरी बेंच के चार धुरंधर



ब्यूटी बरवा
कॉमर्स भाग (सेम - VIII)
सत्र: 202 – 26

कॉलेज की रूम नंबर 104 की सबसे आख़िरी बेंच कोई मामूली लकड़ी का फर्नीचर नहीं थी। उस पुरानी, खरोंचों से भरी बेंच पर चार कोनों में चार नाम उकेरे गए थे—रोहन, काव्या, आर्या और नेहा।

प्रोफेसर जब ब्लैकबोर्ड पर चॉक से लिखना शुरू करते और उनकी पीठ घूमती, ठीक उसी पल हमारी असली दुनिया शुरू होती थी।

बेंच के बाएँ कोने पर बैठता था रोहन—चौड़े कंधे, हमेशा स्पोर्ट्स किट बैग साथ रखने वाला और कॉलेज की फुटबॉल टीम का स्टार कैप्टन। मैदान पर जब वो अपनी जर्सी नंबर 10 के साथ गेंद लेकर दौड़ता, तो लगता था जैसे पूरी विरोधी टीम उसके सामने बेबस हो चुकी हो।



उसके ठीक बगल में बैठती थी काव्या। काव्या यानि निडर बोली, बेबाक अंदाज़ और डांस का ऐसा जुनून कि उसकी उंगलियां भी हमेशा किसी न किसी बीट पर थिरकती रहती थीं। हिप-हॉप से लेकर कथक तक, काव्या जब स्टेज पर उतरती, तो पूरा हॉल सांसें थामकर उसे देखता रह जाता। और बेंच के दाहिने कोने पर चिपककर बैठी होतीं आर्या और नेहा। प्रोफेसर की कड़ी नज़र से बचकर, डेस्क के नीचे एक ही ईयरफोन दोनों अपने कानों में बाँटकर लगाए रखतीं। उन दोनों की अपनी एक अलग ही दुनिया

थी—'के-ड्रामा' (Korean Drama) की दुनिया! स्क्रीन पर जब भी कोई इमोशनल या रोमांटिक सीन आता, आर्या दबी सांस में फुसफुसाती, "देख नेहा, क्या कमाल का सीन है!"

नेहा मुस्कुरा देती, लेकिन उसकी आँखें चुपके से मुड़कर रोहन को देखने लगती थीं।

नेहा और रोहन का किस्सा कॉलेज में शुरू नहीं हुआ था। यह कहानी तो क्लास 8 की उस मासूम उम्र से चली आ रही थी, जब रोहन ने पहली बार अपनी जेब से एक टॉफी निकालकर चुपके से नेहा की डेस्क पर रखी थी। स्कूल के दिनों का वो पहला मासूम प्यार कॉलेज की इस आख़िरी बेंच तक आते-आते और भी गहरा और पक्का हो चुका था। रोहन जब भी मैदान में कोई निर्णायक गोल दागता, तो पूरी भीड़ के शोर के बीच उसकी नज़रें सबसे पहले स्टैंड्स में खड़ी नेहा को ढूँढती थीं और जब भी नेहा कोई रोमांटिक के-ड्रामा देखकर कहती, "ये हीरो कितना केयरिंग है ना," तो आर्या उसे कोहनी मारते हुए चिढ़ाती, "हाँ-हाँ, बिल्कुल तेरे रोहन जैसा... क्लास 8 से आज तक वैसा ही तो है!"

हम चारों कभी रटंत तोते या किताबी कीड़े नहीं रहे, लेकिन फिर भी हम पूरी फैकल्टी के सबसे पसंदीदा स्टूडेंट्स थे। टीचर्स जानते थे कि ये चारों भले आख़िरी बेंच पर बैठकर चुपके से टिफिन खाते हों या चुटकुले पास करते हों, लेकिन जब भी कॉलेज के सम्मान की बात आएगी, ये चारों अपनी जान लगा देंगे।

बात हमारे फाइनल ईयर के एनुअल फेस्ट की है। पूरे कॉलेज को सजाया गया था और ऑडिटोरियम खचाखच भरा हुआ था। शहर के दूसरे कॉलेजों से भी छात्र आए हुए थे।

अचानक, मुख्य डांस परफॉर्मेंस से ठीक दस मिनट पहले बैकस्टेज पर हड़कंप मच गया। साउंड सिस्टम का मेन एंपलीफायर जल चुका था। डिजिटल ट्रैक बजना पूरी तरह बंद हो गया। कल्चरल हेड घबराहट में रोने जैसी हो गई और इवेंट मैनेजर हाथ-पैर फूलने की वजह से हाथ खड़े कर चुका था।

ऑडिटोरियम में बैठी भीड़ धीरे-धीरे शोर मचाने लगी थी और कॉलेज की साख दांव पर लगी थी।

तभी काव्या आगे आई। उसने अपने डांस कॉस्ट्यूम का दुपट्टा कमर में कसकर बाँधा और अपनी उसी बोल्ड व रौबदार आवाज़ में कहा, "कोई पैनिक नहीं करेगा! जब तक हम चारों यहाँ हैं, ये फेस्ट फ्लॉप नहीं हो सकता।"

उसने तुरंत रोहन की तरफ देखा, "रोहन! स्पोर्ट्स रूम से ढोल, कांगो और जो भी बीट इंस्ट्रूमेंट मिले, अभी लेकर आओ!"

रोहन ने एक सेकंड गँवाए बिना दौड़ लगा दी। ठीक दो मिनट में वो दो ढोल टांगे और कांगो बगल में दबाए स्टेज के पीछे हाजिर था।

काव्या ने आर्या और नेहा की तरफ देखा, "तुम दोनों स्टेज के दोनों किनारों पर रहोगी। आर्या, तुम बीट के साथ क्लैपिंग का रिदम संभालोगी और नेहा, तुम वोकल सपोर्ट दोगी। रोहन, तू बस ढोल पर वो बीट बजा जो हम प्रैक्टिस करते थे।"

जैसे ही पर्दा उठा, ऑडिटोरियम में सन्नाटा छा गया। कोई डिजिटल म्यूजिक नहीं था, कोई रिकॉर्डेड ट्रैक नहीं था।

अचानक स्टेज पर रोहन का ढोल गूंज उठा—एक ज़बरदस्त, थिरका देने वाली बीट पर! साइड से आर्या और नेहा की तालियों और आवाज़ की जुगलबंदी शुरू हुई, और बीच स्टेज पर आई काव्या। उस रात उसने ढोल की हर एक थाप पर ऐसा बेमिसाल, ऊर्जावान और बिंदास डांस किया कि पूरा ऑडिटोरियम अपनी सीटों से उठकर खड़ा हो गया। तालियों की गूंज से हॉल की छत हिलने लगी।

परफॉर्मन्स खत्म होते ही पूरे हॉल में 'वन्स मोर' के नारे लगने लगे। हमारे प्रिंसिपल सर खुद स्टेज पर आए। उन्होंने काव्या, रोहन, आर्या और नेहा को गले लगाया और माइक संभालकर बोले:

“लोग कहते हैं कि भविष्य सिर्फ आगे बैठने वाले लिखते हैं, लेकिन हमारे कॉलेज की आत्मा इस आख़िरी बेंच पर धड़कती है।”

समय मानो पंख लगाकर उड़ गया। आज फेयरवेल की शाम थी।

चारों कैंटीन के पीछे उसी पुरानी जगह पर खड़े थे। रोहन के हाथ में स्टेट फुटबॉल कैंप का सिलेक्शन लेटर था, काव्या अपनी नई डांस अकेडमी के पेपर्स दिखा रही थी, आर्या को कोरियन एम्बेसी से हायर स्टडीज की स्कॉलरशिप मिल चुकी थी, और नेहा मुस्कुराते हुए रोहन का हाथ थामे खड़ी थी।

क्लास 8 में एक टॉफी से शुरू हुआ वो रिश्ता आज भी उतना ही सच्चा था।

कॉलेज की रूम नंबर 104 की लास्ट बेंच पर आज भी उनके नाम लिखे हुए थे, और उनकी यह कहानी अब हमेशा के लिए कॉलेज मैगज़ीन के पन्नों में अमर हो चुकी थी।

****

मोबाइल से दूरी, अपनों से नजदीकी



दीपा कुमारी
हिन्दी विभाग (एम. ए. , सेम - IV)
सत्र: 2024 - 26

यह बात उस समय की थी, जब हम तीन बहनें दशहरे की छुट्टी बिताने के लिए नानी घर गए थे। तीनों बहनें नानी के घर जाने के लिए बहुत प्रसन्न थीं। हम वहाँ पहुँचते हैं। हम तीनों बहनें नानी, मामा, नाना सभी से मिलते हैं। बड़े ही भव्य तरीके से तीनों बहनों का स्वागत किया जाता है। एक का नाम गीता, दूसरी सुनीता।

नानी वृद्धावस्था में आरंभ कर चुकी थी। नानी तीनों को देखकर बहुत खुश होती है मानो उनके कलेजे को ठंडक पहुँच गई हो। सबसे पहले तीनों नानी को प्रणाम करते हैं उसके बाद घर के अंदर प्रवेश करते हैं। गीता और सुनीता को मोबाइल का अत्यधिक शौक था। वह दिन - रात अपने मोबाइल में तरह-तरह की चीजें देखने लगती हैं तथा कमरे में घुसी रहती हैं। मैं हमेशा नानी से बात करती नानी खूब कहानियाँ सुनाया करती हैं और अपने बचपन के दिनों को स्मरण करतीं हैं। ऐसे ही कहानी सुनते - सुनते शाम हो जाती है।

अगली सुबह एक नया उमंग, नई किरणें लेकर आती है सुबह की मधुर हवा और चिड़ियों की चहचहाहट गाँव के सौंदर्य को और बढ़ा देती है। मैं अपनी छोटी बहनों को जो मामा की बेटियाँ थीं उसे साइकिल पर बैठकर गाँव की कच्ची सड़क पर सैर करवाती हूँ। गीता - सुनीता सुबह के 10 बजे उठते हैं जिससे गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य को महसूस नहीं कर पाते हैं। दोपहर का खाना सभी एक साथ बैठकर खाते हैं इसी बीच दशहरे जाने की बात की जाती है क्योंकि दशहरा शाम में ही खूबसूरत होता है। दशहरा देखकर मन को अत्यंत शांति मिली।इस तरह नानी के घर पर 2 दिन गुजर जाते हैं तीसरे दिन मैं भी गीता - सुनीता के साथ फोन में वीडियो देखती हूँ। तीनों बहनों को फोन चलाये हुए 3- 4 घंटे हो चुके थे। इसी बीच नानी आती है । हम नानी को भी वीडियो दिखाते हैं लेकिन उनकी आँखों में वह खुशी नहीं दिखती जितना बात करते हुए खुश रहती हैं। मेरे मन में एक सवाल आने लगा कि मैं एक दिन बिना फोन चलाये नानी के साथ बिताऊंगी। उनकी जो यादें हैं या स्मरण है मैं उन्हीं के मुँह से सुनना चाहूंगी। उस दिन नानी

के साथ मैं रहने लगे। नानी तरह - तरह की बातें बताने लगीं, उनकी आँखों में जो चमक थी मैं बयां नहीं



कर सकती।

मुझे एक बात समझ आ गई बड़े बुजुर्गों को प्यार और साथ चाहिए उनकी छोटी-छोटी बातों को सुनने के लिए उनके साथ हँसने के लिए। मोबाइल ही सबकुछ नहीं हो सकता, मोबाइल के बिना भी हम खुशी से रह सकते हैं। हमारे बुजुर्गों को हमारी जरूरत है कि हम उनको सही मायने में प्यार और साथ दे सकें। उनकी जरूरतों को बस पूरा करना यह उचित नहीं है। वे हमारे प्यार को तरसते हैं पर बयां नहीं कर सकते हैं। मैं नानी के साथ रहकर उस दिन गाँव की मिट्टी से रूबरू हुई। जीवन की सच्चाई से और असली मुस्कान से।

****

निबंध

हिन्दी: रोजगार एवं करियर की संभावनाएँ



कविता तिर्की
हिन्दी विभाग (सेम - IV)
सत्र: 2023 - 27

हिंदी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है तथा इसकी लोकप्रियता भी भारत के हर कोने में है । हिंदी का उपयोग सभी क्षेत्रों में किया जाता है - सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, शिक्षा , टेलीविजन, मनोरंजन, प्रशासन इत्यादि। आज हिंदी का स्वरूप भी बदल रहा है। पहले की अपेक्षा आधुनिक युग में कुछ परिवर्तन भी हो रहे हैं । हिंदी सिर्फ साहित्य तक सीमित नहीं रहा बल्कि अपना विस्तार भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कर रही है और आज विश्व के अधिकतर देशों में इसकी प्रयोगशीलता बढ़ रही है। इन सभी के कारणों से हिंदी में कार्य और रोजगार की संभावनाएं भी उत्पन्न हो रही हैं।



हिंदी अपना स्थान विश्व स्तर पर बना रही है और अपने कदम को मजबूती से रख चुकी है। डिजिटल युग में हिंदी को लेकर विभिन्न अवसर प्राप्त हो रहे हैं जैसे : प्रशासन के क्षेत्र में, अनुवादक के रूप में, पटकथा लेखक, कंटेंट राइटर के रूप में इत्यादि अवसर उपलब्ध करा सकती है लेकिन इसके लिए हिंदी के साथ लेखन - कौशल, कंप्यूटर का ज्ञान, तकनीकी की समझ भी जरूरी है क्योंकि इंटरनेट में हमें सभी की आवश्यकता पड़ती है। इसके और भी रोजगार उपलब्ध होने वाले हैं क्योंकि भविष्य में इंटरनेट के प्रयोग से लगातार विकास हो रहा है। मीडिया में हिंदी का प्रयोग अधिक होता है मीडिया तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में इसकी संभावनाएं इस प्रकार हैं - अनुवादक के रूप में, संपादक, एंकर और पत्र लेखन के रूप में भी अपना करियर बना सकते हैं। इंटरनेट के कारण आज हिंदी में भी विभिन्न अवसर मिलते हैं तथा इससे हम अपने भविष्य को संवार सकते हैं। फिल्म और मनोरंजन के क्षेत्र में भी हिंदी को लेकर रोजगार की पर्याप्त संभावनाएं हैं। पटकथा लेखक, विज्ञापन, हिंदी अनुवाद - यह सभी संभावनाएं आज आधुनिक युग में इंटरनेट के अत्यधिक प्रयोग के कारण मिल सकी है। सरकारी या गैर - सरकारी क्षेत्र में भी हिंदी के अवसर हैं , जैसे: अनुवादक, भाषा अधिकारी, हिंदी शिक्षक एवं बैंकों में हिंदी के लिए पर्याप्त अवसर हैं । सोशल मीडिया में ब्लॉगिंग या ब्लॉग, रील्स , गाना या वीडियो के माध्यम से अपना कंटेंट राइटिंग जैसे अवसर को पाते हैं इन क्षेत्रों के अंदर विभिन्न प्रकार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न खेलों एवं कार्यक्रमों में एंकरिंग के माध्यम से भी अपना करियर बना सकते हैं। इन क्षेत्रों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी भाषा का प्रयोग भी किया जाता है। इसमें भी अनुवादकों की आवश्यकता पड़ती है।

आज के आधुनिक समय में हिंदी विश्व भाषा के रूप में उभर कर सामने आ रही है तथा दूसरे देश के लोग भी इस भाषा को सीखना चाहते हैं। हिंदी भाषा - भाषी एक शिक्षक के रूप में अपना योगदान दे सकते हैं । व्यापार के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियां जो भारत में अपना उत्पाद या प्रोडक्ट बेचना चाहें तो उन्हें हिंदी अनुवाद की आवश्यकता पड़ेगी तथा वह हिन्दी में ही अपना विज्ञापन करना चाहेगी। समय बदल चुका है पहले हिंदी के विकल्प ज्यादा नहीं थे लेकिन इस डिजिटल युग में इंटरनेट के कारण हिन्दी में काफी रोजगार की संभावनाएं मौजूद हैं जो किसी के भी करियर के लिए एक सुनहरा अवसर बन सकता है। डिजिटल युग में यह संभावनाएं इंटरनेट के कारण तीव्रगति से फैल रही है।

भारत में हिन्दी अत्यंत लोकप्रिय भाषा है तथा यह भारत की सांस्कृतिक परंपराएं, ज्ञान - विज्ञान, तकनीकी, शिक्षा, मीडिया, संपादक, प्रशासन, फिल्म, मनोरंजन इत्यादि क्षेत्र में उपयोग में लायी जाती है तथा मीडिया या पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवादक, कंटेंटराइटर, फिल्म में पटकथा लेखक, पत्रकार, शिक्षा में हिंदी शिक्षक, राजभाषा अधिकारी, ब्लॉग तथा इंटरनेट के माध्यम से सभी प्रकार की रोजगार की संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। इसलिए आज के युवा वर्ग इन सभी क्षेत्रों में रोजगार पा सकते हैं। युवा वर्ग को हिंदी के अलावे दूसरी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वे रोजगार पा सकें।

****

जीवन में करियर एवं रोजगार के विभिन्न अवसर



सैनी केरकेट्टा
हिंदी विभाग (सेम IV)
सत्र: 2023 - 27



रोजगार मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता, रुचि और क्षमता पर निर्भर रहता है, जिससे उसे आर्थिक व्यवस्था के साथ-साथ रोजगार के क्षेत्र में अनेक संभावनाएं उत्पन्न हो सके। रोजगार प्रत्येक युवा के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसके कारण वे अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

आज के समय में केवल शिक्षा का उद्देश्य डिग्री प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के जीवन जीने को सिखाता है। बदलते तकनीक और आधुनिक युग में रोजगार के अवसर बहुत कम हैं जिससे युवा बेरोजगार रह जाते हैं। रोजगार जीवन को बेहद सुख देती है लेकिन युवाओं को अपने योग्यता, रुचि और भविष्य की संभावनाएं पता होनी चाहिए।

भारत में युवाओं की जनसंख्या अधिक होने के कारण रोजगार की संभावनाएं कम है। फिर भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं; जैसे - शिक्षा, बैंक, कृषि, पर्यटन, संचार आदि। इंटरनेट और डिजिटल युग में ऑनलाइन व्यवसाय और डिजिटल मार्केटिंग जैसे अनेक नई संभावनाएं आयें हैं। भारत में युवा अपने करियर का चुनाव करने के लिए शिक्षा ग्रहण तो करते हैं लेकिन उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता है। इसलिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएं शुरू की गई है स्वरोजगार और कौशल विकास को ही बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे युवा अच्छा प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्राप्त कर रोजगार भी प्राप्त कर सके और दूसरों को भी रोजगार दे सकें।

आज के समय में पारंपरिक नौकरी ही रोजगार का माध्यम नहीं है बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व, कठिन परिश्रम, धैर्य और निरंतर सुखी रहना ही जीवन को आगे बढ़ाने में मदद करती है। जीवन में अपने योग्यता, रुचि और क्षमता के अनुसार करियर चुनने का विकल्प होता है। अच्छे करियर को चुनने के लिए केवल किताबी ज्ञान ही महत्व नहीं है बल्कि अपनी योग्यता, क्षमता और भविष्य की संभावनाएं ही जीवन जीने के तरीके को सुगम बनाती हैं।

भारत में हिंदी के क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं जिसके लिए युवाओं को हिंदी क्षेत्र में आगे आकर अपने लक्ष्य को निर्धारित करना चाहिए। करियर की संभावनाएं जीवन के हर एक मोड़ पर खड़ी है जिससे हमें इसके लिए अच्छी तरह से प्रयास करते रहना चाहिए तभी हम रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे। यदि हम अपनी रुचि, क्षमता, अनुशासन और कठिन परिश्रम निरंतर करते रहते हैं तो निश्चित ही सफलता मिलती है।

अतः रोजगार एवं करियर की संभावनाएं जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व और भविष्य की संभावनाएं को दिशा देने में महत्वपूर्ण है। अनुशासन, कठिन परिश्रम, योग्यता के माध्यम से ही हम एक सफल करियर का चुनाव कर सकते हैं।

****

हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप और रोजगार के नए अवसर



प्रिया मांझी
हिंदी विभाग (सेम- IV)
सत्र: 2023 - 27

हिंदी सिर्फ भाषा नहीं बल्कि युवाओं और आने वाली पीढियों के लिए रोजगार और करियर का एक बेहतर क्षेत्र है। संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में दर्जा दिया गया है अर्थात् किसी भी सरकारी कार्यालय में हिंदी भाषा में कार्य निष्पादन की जा सकती हैं। हिंदी इतनी विकसित हो चुकी है कि अब वह मात्र भाषा ही नहीं बल्कि रोजगार का व्यापक क्षेत्र भी बन चुकी हैं।



वर्तमान में हम देख सकते हैं कि हिंदी हर क्षेत्र, हर स्थान, हर राज्य में बोली जाती है। हिंदी अब भाषा और बोली से ऊपर उठकर रोजगार का आधार बन चुकी है। सरकार ने हर सरकारी क्षेत्र में हिंदी के लिए निश्चित रूप से स्थान रखा है हम राजभाषा अधिकारी, हिंदी प्रबंधक एवं अनुवादकों को देख सकते हैं। इसके अलावा व्यापार के क्षेत्र में हिंदी बहुत आगे बढ़ चुकी हैं। अंग्रेजी के बाद हिंदी ही सबसे अधिक बोलने और समझने वाली भाषा है इसलिए विदेशी कंपनियों को भारत में व्यापार करने के लिए हिंदी भाषा का ज्ञान होना बहुत जरूरी हो गया है जिसके कारण हिंदी का दर्जा और ऊँचा हो गया है। हिंदी में करियर की संभावनाएं वर्तमान समय में मीडिया और पत्राचार के क्षेत्र में बढ़ रही है। हम देख सकते हैं कि यूट्यूब, व्हाट्सएप, गूगल, फेसबुक , इंस्टाग्राम आदि जगहों पर हिंदी का प्रयोग सबसे अधिक किया जा रहा है। हिंदी को अधिक लोकप्रिय भाषा माना जा रहा है लोगों को हिंदी में कंटेंट, संवाद, मनोरंजन करने में अधिक सरलता और मनोरंजक महसूस होता है। इसलिए सोशल मीडिया के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं और अधिक बढ़ सकते हैं।

हिंदी पत्राचार, संवाद, पटकथा, गीत, अखबार इत्यादि स्थानों पर भी अधिक लोकप्रिय है क्योंकि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे सभी राज्य के लोग बोल और समझ सकते हैं। इसलिए वे हिंदी में ही टेलीविजन देखना, कहानी पढ़ना - सुनना, रेडियो सुनना, अखबार पढ़ना, नाटक देखना इत्यादि करना पसंद करते हैं। तो हम कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में हिंदी की संभावना अधिक हैं।

वर्तमान में हिंदी के प्रासंगिकता के तौर पर हम कह सकते हैं की हिंदी भविष्य में और अधिक विकसित होगी क्योंकि जहाँ विदेश में रहने वाले लोग सिर्फ अंग्रेजी व अपनी भाषा बोलते थे वहीं आज सोशल मीडिया में हिंदी के प्रचलित होने के कारण विदेशी भी हिंदी भाषा बोलने लगे हैं। वर्तमान में भारत के अलावा अन्य देशों में भी हिंदी भाषा बोली जाती है। जैसे अमेरिका के महाविद्यालय में हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। आज हिंदी भारत के विद्यालय और महाविद्यालय से ऊपर उठकर पूरे विश्व में गूंज रही है। हिंदी आज राजभाषा है परंतु इसी तरह आगे बढ़ती रही तो एक दिन राष्ट्रभाषा भी जरूर बनेगी।



इस तरह हिंदी में रोजगार और करियर की संभावनाएं अत्यधिक हैं क्योंकि हिंदी अब सिर्फ बोली तक सीमित नहीं है बल्कि यह बोली और भाषा से भी ऊपर उठ चुकी है। हिंदी सिर्फ भावनाओं को साझा करने का साधन नहीं है बल्कि रोजगार और कैरियर के क्षेत्र में युवाओं की पहचान भी बन चुकी है।

****

कविताएँ
(शिक्षक दिवस विशेष)

(1)

'गुरु - 'ज्ञान की ज्योति '



वर्षा कुमारी
राजनीति विज्ञान विभाग (एम . ए. सेम - IV)
सत्र: 2024 – 26

गुरु अज्ञान के अंधकार में ज्ञान
का प्रकाश है,
गुरु हर शिष्य के जीवन में
सफलता का विश्वास है।
गुरु मजबूत समाज की नींव का आधार है,
जो शिष्य के जीवन को देते
नया आकार हैं।



गुरु केवल शिक्षा नहीं, संस्कार देते हैं,
जीवन के हर मोड़ पर सही विचार देते हैं।
गुरु गिरकर उठना और हार कर जीतना सिखाते हैं,
हर शिष्य के भीतर आगे बढ़ने की उम्मीद जगाते हैं।

गुरु जीवन को नई पहचान देते हैं,
सपनों को साकार करने का अरमान देते हैं।
विचारों को नई उड़ान देते हैं,
शिष्य को ज्ञान का प्रकाश देते हैं।

****

(2)

गुरु बिन हर शिष्य अधूरा

गुरु बिन हर शिष्य अधूरा,
तुमने हर शिष्य के जीवन को किया पूरा।
गुरु बिन हर शिष्य अधूरा,
तुमने बांटे जन - जन को ज्ञान का सागर।

अ - आ, इ - ई से आरंभ कर,
बनाए कई विद्वान।
सही - गलत का भेद बताया,
तुमने जाने कितने जीवन को सजाया।

गुरु बिन हर शिष्य एक कोरा कागज,
तुम - संग मिल लिखें कई अरमान।
गुरु बिन हर शिष्य अधूरा,
तुमने हर शिष्य के जीवन को किया पूरा।

****

मेरी हिन्दी, मेरा गौरव



जेन रोजलीन बारला
अर्थशास्त्र विभाग (सेम - VIII)
सत्र: 2022- 26

मेरी हिन्दी, मेरा गौरव
भारत का है ये वैभव
ना झूठी शान ना नकली लिबास
मातृभाषा में ही बसा है मेरा इतिहास।



तुलसी के दोहों से सींची है ये,
कबीर की सखी में जीती है ये,
प्रेमचंद की कहानियों की पीड़ा है ये,
निराला की क्रांति की धीरता है ये।

पूछो मत क्या करती है हिन्दी
हर दिल को अपना बना लेती है हिन्दी।
बिंदी से लेकर, भारत तक जाती है
माँ के आँचल जैसी लिपट जाती है हिन्दी।

गँवार नहीं, गंगा है हिन्दी
जिसके हर शब्द में,
यमुना - सा पावन तट है।
अ से अनपढ़ नहीं, अ से अनंत है,
ज्ञ तक जाओ तो पूरा ब्रह्मांड है।

जड़ें खो देता है वह,
जो अपनी भाषा भूल जाता है।
खुद को खो देता है वह,

जो अपनी लिपि छोड़ देता है।
कमजोरी नहीं ताकत है हिन्दी
हम लिख चुके वेद, जब दुनिया सीख रही थी लिखना
हिन्दी हमारी पहचान है
हमारी पहचान ही हमारा गौरव है।

दुनिया करे सलाम ऐसी पहचान बनानी है,
विश्व के मंच में हिंदी को सम्मान दिलाना है,
शरीर में सांस है जब तक, आवाज है तब तक
हिन्दी ही हमारी शान है।

अंत में बस इतना कहूंगी,
हिन्दी सिर्फ एक दिन नहीं, हर दिन बोलूंगी,
शुद्ध लिखूंगी, गर्व से पढ़ूंगी,
आने वाली पीढ़ी को विरासत में दूंगी।

****

मेरी हिन्दी, मेरा गौरव

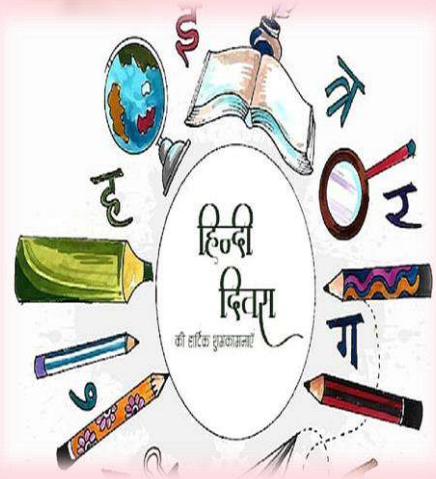


दीपा कुमारी
हिन्दी विभाग (सेम- VIII)
सत्र: 2022- 26

जो भारत माँ का सिंगार पूर्ण करें, वो भारत माँ की प्यार बिंदी है।
है हिंदुस्तान सृजित जिससे, वो हमारी प्यारी भाषा हिन्दी है।

हमें गर्व है अपनी भाषा पर, जन - जन इसकी सहेली है।
भारत आज अखंड है जिससे, वह अमृत भाषा हिन्दी है।

तैंतीस व्यंजन ग्यारह स्वर जो इसके आधार हैं।
अपभ्रंश, अवधी, ब्रजभाषा सब इसके परिवार हैं।



संस्कृत से जन्मी संस्कृति बचाए रखा है।
हिन्दी से है गौरव हमारा अपनी शान बचाए रखा है।

'अ' - अनपढ़ से शुरू करके 'ज्ञ' से ज्ञानी बनाती है।
हमें गर्व है अपनी भाषा पर जो ऐसी पाठ पढ़ाती है।

ये सिर्फ भाषा नहीं साहित्य का सागर है।
तुलसी का राम, सूर का ये गागर है।
कबीर की वाणी, मीरा की तान है।
हमें गर्व है अपनी भाषा पर क्योंकि ये मेरी पहचान है।

मेरी हिन्दी, मेरा गौरव



प्रतिभा कुजूर
हिन्दी विभाग (सेम - I)
सत्र: 2026 - 30

मेरी हिन्दी, मेरा गौरव ,
भारत की पहचान है ।संस्कृति की यह बोली न्यारी,
जन - जन की यह शान है।



मातृभूमि की पावन माटी का,
यह सबसे सुंदर अनुपम वरदान है।
गूंज रहा जो ब्रह्मांड के कण - कण में,
यह हर भारतीय का आत्मसम्मान है।

वेदों की पावन गहराइयों से ,
निकला इसका अमूल्य स्वरूप है।
तुलसी - कबीर की वाणी बनकर,
चमकी जैसे स्वर्णिम धूप है।

सरल सहज और बड़ी रसीली,
हर दिल को यह जोड़ के रखती।
पूरब - पश्चिम, उत्तर - दक्षिण,
अनेकता में एकता बुनती।

इतिहास के स्वर्णिम पन्नों से लेकर,
आधुनिक युग का यह सतरंगी वितान है।
ज्ञान, चेतना और संस्कारों की पाती,
हिन्दी ही हमारी संस्कृति का प्राण है।

यह सिर्फ एक भाषा ही नहीं यारों,
यह तो हर धड़कन की साझी पुकार है।
विश्व पटल पर लहराता जो परचम,
वह हमारी इस मातृभाषा का चमत्कार है।

****

मेरी हिन्दी, मेरा गौरव



कविता तिर्की
हिन्दी विभाग (सेम -IV)
सत्र: 2023 -27

हिन्दी केवल भाषा नहीं
अनुभव, रस, संवेदना
जीवन का आधार है, यह मेरी पहचान है।
मन के आंतरिक मन में बसी अनुभव और भावनाओं
का माध्यम है।
जिससे हम अपने सपनों को प्रस्तुत करते हैं।



यह वही है, जिसमें कोमलता, सरसता से मन के विचारों
को कहने का अलग - अंदाज है।
मैंने जाना हिंदी वही है, जो हिन्दुस्तानियों के हर दिल को
अपने मासूमियत से मोह लेने वाली है।
माना, हममें एकता का प्रतीक है,
लेकिन कहीं इससे ज्यादा व्यक्ति के हृदय में छुपी,
विचार और स्नेह, अभिव्यक्ति का आधार है।

मेरा गौरव है, मेरी जिंदगी का अहम भाग है हिन्दी,
हिन्दुस्तानियों के हृदय में बसी एकता का सूत्र,
मन के विचार, भावनाओं का नेतृत्वकर्ता है हिन्दी,
मेरा गौरव और पहचान है 'हिन्दी'।

****

हिन्दी व्याकरण

ई, यी तथा ये, ए के प्रयोग

देवनागरी लिपि में ई, यी तथा ये, ए के प्रयोग कहाँ करने चाहिए और कहाँ नहीं, इस संबंध में मानकीकरण की दिशा में कुछ उल्लेखनीय कार्य किया गया है -

- संज्ञा शब्दों के अंत में 'ई' का प्रयोग होना चाहिए 'यी' का नहीं। यथा:
  मिठाई, भलाई, बुराई, लड़ाई, पढ़ाई, खुदाई।
- जिन क्रियाओं के भूतकालिक पुल्लिंग एकवचन रूप के अंत में 'या' आता है उसके बहुवचन रूप में 'ये' और स्त्रीलिंग रूप में 'यी ' का प्रयोग उचित है। यथा:
  आया - आयी, आये – शुद्ध प्रयोग हैं।
  गया - गयी, गये – शुद्ध प्रयोग हैं।
- जिन क्रियाओं के भूतकालिक पुल्लिंग एकवचन के अंत में 'आ ' आता है उनके बहुवचन रूपों में 'ए' और स्त्रीलिंग रूपों में 'ई' का प्रयोग उचित है। यथा:
  हुआ - हुई, हुए – शुद्ध प्रयोग है।
- विधि क्रिया और अव्यय में 'ए' का प्रयोग ही उचित है। यथा:
  चाहिए, दीजिए, लीजिए, कीजिए, पीजिए, इसलिए, के लिए।

****

विद्यार्थी उपलब्धियाँ



स्नातकोत्तर इतिहास की छात्रा प्रेमा सोरेंग, सत्र: 2023 - 25 ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राँची विश्वविद्यालय, राँची से दो गोल्ड मेडल (सामान्य कोटि का गोल्ड मेडल तथा एसटी वर्ग में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर " सिरी गोएन्दा मिंज मेमोरियल गोल्ड मेडल - 2025) हासिल किए।





हिंदी दिवस समारोह में एंटी रैगिंग सेल द्वारा एंटी रैगिंग सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न इंटर प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए।





विभागीय फुटबाल टूर्नामेंट में बालिका वर्ग में हिंदी विभाग तथा बालक वर्ग में कॉमर्स विभाग उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए।





हिंदी दिवस के अवसर पर विविध लेखन प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यार्थी।

संत जेवियर्स कॉलेज, धवईपानी, सिमडेगा

पता : धवईपानी, डाकघर - खिजरी,
थाना - ठेठईटांगर, पिन - 835235

जिला : सिमडेगा, झारखण्ड

ईमेल : sxcsimdega2016@gamil.com